विनोद भारद्वाज

रिचर्ड की मौन मुस्कान

रिचर्ड बार्थोलम्यू महज एक कला समीक्षक नहीं वरन बेहतरीन कवि, पेंटर एवं छायाकार भी थे

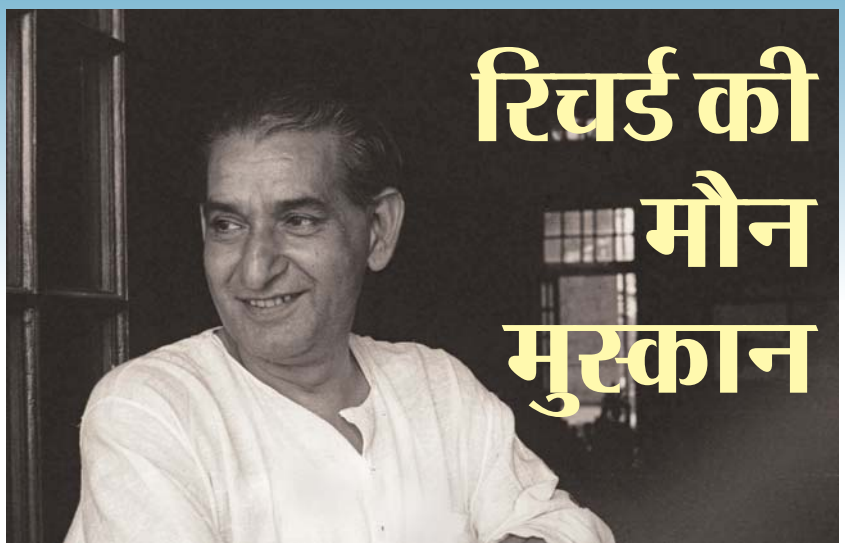

कंवल कृष्ण की तसवीर

साभार : 'द इस्टेट ऑफ रिचर्ड बार्थोलम्यू'

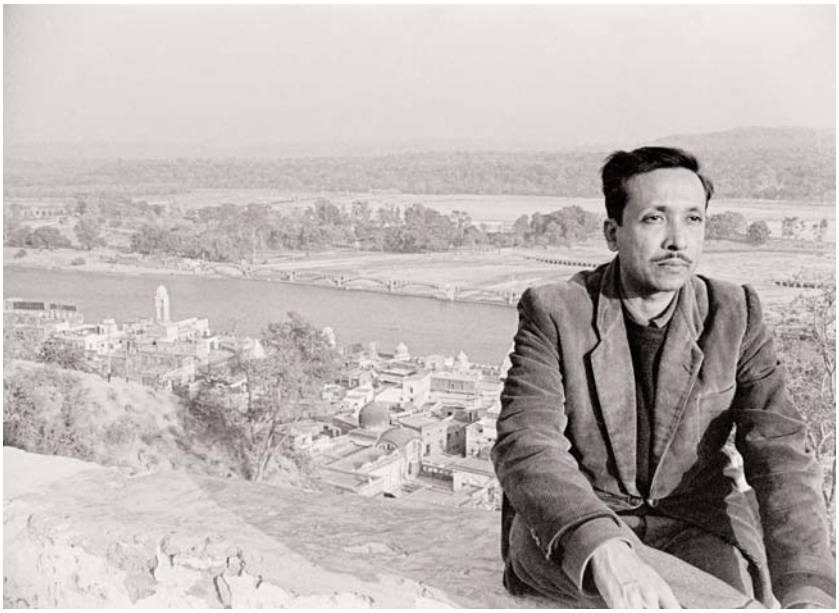

वीरेन डे की तसवीर

साभार : 'द इस्टेट ऑफ रिचर्ड बार्थोलम्यू'

रिचर्ड बार्थोलम्यू (1926-1985) का जन्म तत्कालीन बर्मा में हुआ था। 1942 में जापानियों ने जब बर्मा पर कब्जा कर लिया तो वह वहां से भागकर भारत आ गए। सेंट स्टीफंस कॉलेज, दिल्ली से उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एमए किया। 1951 से 1958 तक वह दिल्ली के प्रसिद्ध मॉडर्न स्कूल में अध्यापक भी रहे। वह कवि, पेंटर, फोटोग्राफर, कला प्रशासक, कला समीक्षक सभी कुछ थे। अंत में उन्हें कला समीक्षक के रूप में ही जाना जाएगा। पर कला प्रेमियों के लिए हैरानी की बात है कि रिचर्ड के कला लेखन का प्रतिनिधि संकलन उनके असामयिक निधन के 27 साल बाद आ सका है। रिचर्ड थॉट, इंडियन एक्सप्रेस (1958-62), टाइम्स ऑफ इंडिया (1962 के बाद से) के कला समीक्षक थे। 1960 -1963 में वह कुणिका कैमोल्ड आर्ट सेंटर के निदेशक थे और 1977 से 1985 तक वह ललित कला अकादमी के सचिव भी थे। कला समीक्षक के अलावा रिचर्ड एक बहुत अच्छे फोटोग्राफर भी थे। उनके पुत्र पाब्लो आज भारत के चुने हुए छाया चित्रकारों में गिने जाते हैं। दस सालों की मेहनत के बाद हाल में रिचर्ड बार्थोलम्यू द आर्ट क्रिटिक नाम से एक महत्वपूर्ण पुस्तक सामने आई है। इसमें रिचर्ड लॉरेंस बार्थोलम्यू के लेखन के अलावा उनके अनेक दुर्लभ छायाचित्र भी शामिल हैं। जाहिर है, पचास, साठ,सत्तर के दशकों में रिचर्ड ने देश के नामी कलाकारों के साथ आत्मीय समाय बिताया था। उनके कैमरे ने बहुत संवेदनशील ढंग से इन चित्रकारों के चेहरे और शारीरिक मुद्राओं को कैद किया था। उनके श्वेत-श्याम छायाचित्र आज गुजरे हुए जमाने के कलात्मक दस्तावेज बन गए हैं। जैसा कि रिचर्ड ने लिखा भी है उस दौर में कलाकृति की कीमत व्हिस्की की एक बोतल या एक सूती साड़ी से ज्यादा नहीं थी लेकिन कला तो थी। रचनात्मकता की अद्भुत पैशन थी। 1986 में हुसैन ने रिचर्ड की मौन मुस्कान को याद किया था। कला की दुनिया की गहमागहमी हो या कॉफी पीने का एकांत अनुभव हो। रिचर्ड की मौन मुस्कान उस दौर के कलाकारों को आज भी याद आती है। मैक्स मुलर भवन में रिचर्ड की पुस्तक के विमोचन में सैयद हैदर रजा (रजा फाउंडेशन ने इस पुस्तक के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग भी दिया है) , कृष्ण खन्ना, राम कुमार, ए.रामचंद्रन, सतीश गुजराल सभी दिग्गज कलाकार आए थे। रामचंद्रन तो बहुत कम आयोजनों में ही इन दिनों दिखाई देते हैं। रिचर्ड के समय के बाद के चर्चित कलाकार, रणवीर कालेका, सुबोध गुप्ता, पुष्पमाला एन आदि भी इस बड़े कला समीक्षक को याद करने के लिए शामिल हुए थे।

रिचर्ड के छायाचित्रों की एक सुंदर प्रदर्शनी 2008 में न्यूयॉर्क की सीपिया गैलरी और 2009 में दिल्ली की फोटोइंक गैलरी में हो चुकी है। दिल्ली में रिचर्ड के दौर में चालर्स फाबरी, कृष्णन, जया अप्पासमी, केशव मलिक, केके नायर, शांतो दत्ता और के.बी. गोयल आदि नाम भारतीय कला के नियमित और प्रखर लेखक थे। गीता कपूर भी नए रेडिकल समीक्षकों में सक्रिय हो गई थीं। रिचर्ड की इस पुस्तक की भूमिका गीता कपूर ने ही लिखी है। रिचर्ड इस बात को जानते थे कि अखबारों में महीने में दस बार, आठ-दस इंच के लेखन से कला समीक्षक की भूमिका पूरी नहीं हो जाती। लेकिन साठ-सत्तर के दशक में चार्ल्स फाबरी, रिचर्ड आदि का सात-आठ इंच का लेखन भी कलाकारों के लिए बड़ी बात थी। कई दिनों तक इन छोटी-छोटी टिप्पणियों की चर्चा होती रहती थी।

bhardwajvinodk@gmail.com